श्रीगौर-सन्ध्या-आरती

जय जय गोराचाँदेर आरतिको शोभा।
जाह्नवी तटवने जगमन लोभा॥
दक्षिणे निताइ चाँद, वामे गदाधर।
निकटे अद्वैत श्रीनिवास छत्रधर॥
बसियाछे गोराचाँद रत्न-सिंहासने।
आरति करेन ब्रह्मा-आदि देवगणे॥
नरहरि आदि करि' चामर ढुलाय।
सञ्जय मुकुन्द वासुघोष आदि गाय॥
शङ्ख बाजे, घण्टा बाजे, बाजे करताल।
मधुर मृदङ्ग बाजे परम रसाल॥
बहुकोटि चन्द्र जिनि' वदन उज्ज्वल।
गलदेशे वनमाला करे झलमल॥
शिव-शुक-नारद प्रेमे गदगद।
भकतिविनोद देखे गोरार सम्पद॥

श्रीयुगल-सन्ध्या-आरती

जय जय राधाकृष्ण युगल-मिलन।
आरति करये ललितादि सखीगण॥
मदन-मोहन रूप त्रिभङ्ग सुन्दर।
पीताम्बर शिखिपुच्छ चूड़ा मनोहर॥
ललित माधव-बामे वृषभानु कन्या।
नील-वसना गौरी रूपे गुणे धन्या॥
नानाविध अलंकार करे झलमल।
हरिमन-विमोहन वदन उज्ज्वल॥
विशाखादि सखीजन नाना रागे गाय।
प्रियनर्म सखीजत चामर ढुलाय॥
श्रीराधा-माधव-पद सरसिज आशे।
भकति विनोद सखी, पदे सुखे भासे॥